ISSN 2278 - 0327

मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर मानसिक दबाव के प्रभाव का अध्ययन

डॉ. मोहन लाल 'आर्य'
आचार्य, शिक्षा विभाग
आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद (उ०प्र०)

कु. प्रियंका
शोध छात्रा, शिक्षा विभाग
आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद (उ०प्र०)

सार:- प्रस्तुत शोध अध्ययन मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर मानसिक दबाव के प्रभाव का अध्ययन करना मुख्य उद्देश्य है। जिसके लिए शोध की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग करते हुए छात्र, छात्राओं, शहरी, ग्रामीण विद्यार्थियों का प्रतिचयन विधि द्वारा 48 विद्यालयों से 702 विद्यार्थियों का चुनाव किया गया है तथा निर्मित परिकल्पनाओं के परीक्षण हेतु सांख्यिकीय प्रविधियों माध्य, प्रमाप विचलन, प्रमाप विभ्रम, टी परीक्षण/सी0आर0 (क्रान्तिक अनुपात) और सह-सम्बन्ध का प्रयोग किया गया है।

की-वर्डस: विद्यालय, मानसिक दबाव, शैक्षिक उपलब्धि, शहरी एवं ग्रामीण।

प्रस्तावना: - एक राष्ट्र अथवा समाज के लिए सबसे महत्वपूर्ण साधन मानव है। कोई भी राष्ट्र उस समय ही उन्नति के पथ पर अग्रसर हो सकता है जबकि उसके अन्दर प्रत्येक मानव को यह सुविधा प्राप्त हो कि वह स्वतन्त्रतापूर्वक अपना उतना विकास कर सके जितना कि उसमें विकास करने की क्षमता है। प्रत्येक व्यक्ति के अन्दर निहित शक्तियाँ होती हैं। जब इन शक्तियों को फलने-फूलने के अवसर मिलते हैं तो उसका विकास उसकी क्षमता के अनुसार हो जाता है, किन्तु यदि ऐसा नहीं होता तो उसका पूर्ण विकास नहीं हो पाता। परम्परागत रूप में माता-पिता ही पूर्ण रूप से बालक के जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में उसके विकास के प्रति उत्तरदायी होते हैं। जब बालक का शारीरिक विकास हो रहा होता है, उसके संवेगात्मक विकास की नींव रखी जा रही होती है, उस समय माता-पिता का प्रभाव ही सबसे महत्वपूर्ण होता है। किन्तु वर्तमान काल में परिवार का महत्व बालक के विकास में कम हो गया है। अब यद्यपि माता-पिता साथ भी रहते हैं तब भी बालक की ओर अपना पूर्ण ध्यान नहीं दे पाते। माता-पिता दोनों के पास समय का अभाव होता है, दोनों को ही अपने-अपने कार्यों से फुरसत नहीं मिलती। इसके अतिरिक्त उनको यह ज्ञान भी ठीक से नहीं होता कि बालकों का उत्तम विकास किस प्रकार हो सकता है। इन कारणों से तथा इसलिए भी कि आज के बालक की आवश्यकताएं केवल परिवार द्वारा पूर्ण नहीं की जा सकतीं, उसको औपचारिक ढ़ंग से शिक्षण देने की आवश्यकता होती है। वास्तव में मानव के विकास के इतिहास में शिक्षण एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। मानव ने अपने और दूसरे प्राणियों के बीच में यह अन्तर पाया कि उनका सीखना स्वत: चलता रहता है जबकि मानव को सीखने के लिए शिक्षण की आवश्यकता होती है। मानव-बालक असहाय होता है। उसे जीने के लिए सीखने की आवश्यकता होती है। माँ सबसे पहले इस ओर प्रयास करती है। अपने आदिकाल में मानव माँ से ही जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु शिक्षण लेता रहा था। फिर पिता भी अपना योगदान देने लगा और परिवार की रूपरेखा बनने पर यह परिवार के सदस्यों का कार्य हो गया। जब समाज के ढाँचे का निर्माण हुआ तो शिक्षण समाज का एक महत्वपूर्ण कार्य बन गया। शिक्षण प्रदान करने के लिए विशिष्ट व्यक्तियों को उत्तरदायित्व दे दिया गया जिन्हें शिक्षक अथवा अध्यापक कहा जाने लगा। शिक्षक का अर्थ है 'सिखाने वाला'। सिखाना और सीखना एक ही क्रिया के दो पहलू हैं। सिखाने वाला वही तो होता है जो सीखकर पारंगत हो चुका होता है। अत: उसका स्थान बड़ा हुआ। बड़ा ही 'गुरु' कहलाता है। 'गुरु' का स्थान पाकर भी व्यवसाय के प्रति निष्ठा न हुई तो किसके प्रति होगी।

अत: शिक्षक को ध्यान देना होगा कि शिक्षण को न केवल आनंददायी अनुभव वरन् उसे ज्ञानार्जन एवं सफलता के पर्याप्त स्तर को सुनिश्चित करने वाला भी होना चाहिए। और यह शिक्षण आनंददायी तभी माना जायेगा, जब किसी कक्षा में सभी बच्चे सफलता का अनुभव करने लगें। ऐसे शिक्षण में अधिगम-प्रक्रिया में सभी को सक्रिय रूप से भाग लेने का अवसर मिलता है। बच्चे विद्यालयों में एक अर्थवान् उद्देश्य की प्राप्ति के लिए बने रहें, विद्यालय छोड़कर न जाएं, इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए ऐसा ही शिक्षण एक कुंजी है। बच्चे की आवश्यकताओं और रुचियों से कोई संबंध रखे बिना जो शिक्षण होता है, उसे निश्चय ही बच्चे का शोषण माना जा सकता है क्योंकि ऐसा शिक्षण उसके बचपन के आनंद को छीन लेता है। निस्संदेह प्रत्येक बच्चे को प्रासंगिक शिक्षा, संवेदनशील शिक्षण पाने के साथ-साथ शिक्षण के संबंध में किये जाने वाले निर्णयों में भाग लेने का अधिकार है।

शिक्षण का प्रमुख कार्य है कि 'अधिगम' को प्रभावशाली बनाया जाए। जब भी शिक्षण-क्रिया होगी तभी अधिगम होगा। शिक्षण-क्रियाएं सीखने वाले व्यक्ति के व्यवहार में परिवर्तन लाने के लिए ही की जाती हैं। शिक्षण और अधिगम का आपस में बहुत ही गहरा संबंध है। शिक्षण अधिगम के बिना पूर्ण नहीं कहा जा सकता। वुडवर्थ

के अनुसार, ''किसी भी ऐसी क्रिया की जो व्यक्ति के (अच्छे या बुरे किसी भी तरह के) विकास में सहायक होती है और उसके वर्तमान व्यवसाय और अनुभवों जो कुछ वे हो सकते थे उनसे भिन्न बनाती है सीखने की संज्ञा दी जा सकती है।''

समस्या कथनः

''मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर मानसिक दबाव के प्रभाव का अध्ययन''

शोध अध्ययन के उद्देश्यः प्रस्तुत शोध अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं-

1. छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर मानसिक दबाव के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर मानसिक दबाव के प्रभाव का अध्ययन करना।
3. ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर मानसिक दबाव के प्रभाव का अध्ययन करना।
4. शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर मानसिक दबाव के प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाऐंः

प्रस्तुत शोध के लिए निम्नलिखित परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया हैं-

1. छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर मानसिक दबाव का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।
2. छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर मानसिक दबाव का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।
3. ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर मानसिक दबाव का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।
4. शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर मानसिक दबाव का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

शोध अध्ययन में विधिः

प्रस्तुत अनुसंधान सर्वेक्षण आधारित अनुसंधान है, जिसके अन्तर्गत मुरादबाद जनपद के कक्षा-9 में अध्ययनरत् विद्यार्थियों से प्राप्त आंकड़ों के सारणीयन तथा सांख्यकीय विश्लेषण हेतु छात्र, छात्राओं, ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर मानसिक दबाव परीक्षण का प्रशासन कर समंकों का संग्रहण किया गया।

शोध अध्ययन की जनसंख्याः

प्रस्तुत अध्ययन में जनसंख्या के अन्तर्गत जनपद मुरादाबाद के कक्षा-9 में अध्ययनरत् विद्यार्थियों को विभिन्न चरों (छात्र/छात्रा, ग्रामीण/शहरी) के आधार पर वर्गीकृत करते हुए अध्ययन हेतु सम्मिलित किया गया है।

शोध अध्ययन कर न्यादर्श एवं न्यादर्शन तकनीकीः

प्रस्तुत शोध कार्य में न्यादर्श का चयन दो स्तरों पर किया गया है। प्रथम स्तर पर क्रमागत चयन विधि के आधार पर समग्र विद्यालयों की सूची में से 48 विद्यालयों का चयन क्रमबद्ध प्रतिचयन विधि के द्वारा किया गया है। द्वितीय स्तर पर चयनित विद्यालयों में से 10 प्रतिशत का चयन लाटरी प्रतिचयन विधि द्वारा किया गया है। तत्पश्चात शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण का प्रशासन कर उच्च शैक्षिक उपलब्धि तथा निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों को चिन्हित किया गया। अध्ययन हेतु न्यादर्श के रूप में 702 विद्यार्थियों का चयन किया गया।

शोध अध्ययन के चरः

अध्ययन में प्रयुक्त चर दो प्रकार के हैं स्वतन्त्र चर मानसिक दबाव एवं आश्रित चर शैक्षिक उपलब्धि है।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त उपकरणः

प्रस्तुत शोध कार्य निम्नांकित परीक्षणों का उपयोग किया गया है- विद्यालयी विद्यार्थियों हेतु दबाव अनुसूची (Stress Inventory For School Students) एवं शैक्षिक अभिरुचि मापनी (Educational Interest Test)

शोध आंकड़ा संग्रहण विधि एवं तकनीकीः

आंकड़ों (समंक) संग्रहण के लिए अनुसंधानकर्त्ता व्यक्तिगत रूप से न्यादर्श में चयनित जनपद के विभिन्न विकास खण्डों तथा नगर क्षेत्र के विद्यालयों में गया। अनुसंधानकर्त्ताओं ने विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों की अनुमति लेकर विद्यार्थियों पर मापनियों का प्रशासन किया।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियाँः

प्रस्तुत शोध अध्ययन में निम्नलिखित सांख्यिकीय प्रविधियों माध्य, प्रमाप विचलन, प्रमाप विभ्रम, टी परीक्षण/सी0आर0 (क्रान्तिक अनुपात) और सह-सम्बन्ध का प्रयोग किया गया है।

शोध अध्ययन की परिसीमायेंः

शोधकर्ताओं ने प्रस्तुत शोध कार्य को मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों तक सीमित रखा है।

आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्याः

परिकल्पना-1: छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर मानसिक दबाव का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। प्रस्तुत परिकल्पना के परीक्षण हेतु क्रान्तिक अनुपात (C.R. test) का प्रयोग किया गया है, जिससे प्राप्त परिणाम तालिका संख्या 1 में प्रदर्शित किये गये हैं -

तालिका सं-1

मूल्य	छात्र	
	कम मानसिक दबाव के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि	अधिक मानसिक दबाव के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि
संख्या	204	270
मध्यमान	63.09	59.44
मानक विचलन	15.01	16.67
प्रमाप विभ्रम	1.46	
मध्य अन्तर	3.65	
क्रान्तिक अनुपात (C.R.)	2.50	
सार्थकता स्तर 5%	1.96	

तालिका 1 से स्पष्ट है कि कम मानसिक दबाव के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि तथा अधिक मानसिक दबाव के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान क्रमशः 63.09 तथा 59.44 प्राप्त हुये हैं, जबकि प्रमाणिक विचलन का मान क्रमशः 15.01 तथा 16.67 प्राप्त हुये हैं। दोनों समूहों के मध्यमानों की तुलना करने पर क्रान्तिक अनुपात (C.R.) का मान 2.50 प्राप्त हुआ है, जो कि सार्थकता के स्तर 0.05 पर सार्थक है। अतः शोध कार्य से पूर्व बनायी गयी शून्य परिकल्पना अस्वीकार की जाती है तथा यह कहा जा सकता है कि छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर मानसिक दबाव का प्रभाव पड़ता है। मध्यमान का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि यहाँ पर कम मानसिक दबाव के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान अधिक मानसिक दबाव के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान की तुलना में अधिक है, अतः कहा जा सकता है कि कम मानसिक दबाव के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि अधिक मानसिक दबाव के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि से अपेक्षाकृत अच्छी पायी गयी।

परिकल्पना-2: छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर मानसिक दबाव का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। अतः प्रस्तुत परिकल्पना के परीक्षण हेतु क्रान्तिक अनुपात (C.R. test) का प्रयोग किया गया है, जिससे प्राप्त परिणाम तालिका संख्या 2 में प्रदर्शित किये गये हैं –

तालिका सं-2

मूल्य	छात्राओं	
	कम मानसिक दबाव के छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि	अधिक मानसिक दबाव के छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि
संख्या	105	123
मध्यमान	58.33	57.52
मानक विचलन	15.29	15.49
प्रमाप विभ्रम	2.04	
मध्य अन्तर	0.81	
क्रान्तिक अनपात (C.R.)	0.40	
सार्थकता स्तर 5%	1.96	

तालिका 2 से स्पष्ट है कि कम मानसिक दबाव की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि तथा अधिक मानसिक दबाव की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान क्रमशः 58.33 तथा 57.52 प्राप्त हुये हैं, जबकि प्रमाणिक विचलन का मान क्रमशः 15.29 तथा 15.49 प्राप्त हुये हैं। दोनो समूहों के मध्यमानों की तुलना करने पर क्रान्तिक अनुपात (C.R.) का मान 0.40 प्राप्त हुआ है, जो कि सार्थकता के स्तर 0.05 पर सार्थक नहीं है। अतः शोध कार्य से पूर्व बनायी गयी शून्य परिकल्पना स्वीकार की जाती है तथा यह कहा जा सकता है कि छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर मानसिक दबाव का प्रभाव नहीं पड़ता है। परन्तु मध्यमान का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि यहाँ पर कम मानसिक दबाव की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान अधिक मानसिक दबाव की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान की तुलना में अधिक है, अतः कहा जा सकता है कि कम मानसिक दबाव की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि अधिक मानसिक दबाव की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि से अपेक्षाकृत अच्छी पायी गयी।

परिकल्पना-3: ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर मानसिक दबाव का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। अतः प्रस्तुत परिकल्पना के परीक्षण हेतु क्रान्तिक अनुपात (C.R. test) का प्रयोग किया गया है, जिससे प्राप्त परिणाम तालिका संख्या 3 में प्रदर्शित किये गये हैं–

तालिका सं-3

मूल्य	ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थी	
	कम मानसिक दबाव के विद्यार्थिओं की शैक्षिक उपलब्धि	अधिक मानसिक दबाव के विद्यार्थिओं की शैक्षिक उपलब्धि
संख्या	171	356
मध्यमान	50.79	57.32
मानक विचलन	10.31	15.91
प्रमाप विभ्रम	1.15	
मध्य अन्तर	6.53	
क्रान्तिक अनुपात (C.R.)	5.67	
सार्थकता स्तर 5%	1.96	

तालिका 3 से स्पष्ट है कि कम मानसिक दबाव के ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि तथा अधिक मानसिक दबाव के ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान क्रमशः 50.79 तथा 57.32 प्राप्त हुये हैं, जबकि प्रमाणिक विचलन का मान क्रमशः 10.31 तथा 15.91 प्राप्त हुये हैं। दोनो समूहों के मध्यमानों की तुलना करने पर क्रान्तिक अनुपात का मान 5.67 प्राप्त हुआ है, जो कि सार्थकता के स्तर 0.05 पर सार्थक है। अतः शोध कार्य से पूर्व बनायी गयी शून्य परिकल्पना अस्वीकार की जाती है तथा यह कहा जा सकता है कि ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर मानसिक दबाव का प्रभाव पड़ता है। परन्तु मध्यमान का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि यहाँ पर कम मानसिक दबाव के ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान अधिक मानसिक दबाव के ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान की तुलना में कम है, अतः कहा जा सकता है कि कम मानसिक दबाव के ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अधिक मानसिक दबाव के ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि से अपेक्षाकृत अच्छी नहीं पायी गयी।

परिकल्पना-4: शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर मानसिक दबाव का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। अतः प्रस्तुत परिकल्पना के

परीक्षण हेतु क्रान्तिक अनुपात (C.R. test) का प्रयोग किया गया है, जिससे प्राप्त परिणाम तालिका संख्या 4 में प्रदर्शित किये गये हैं–

तालिका सं–4

मूल्य	शहरी क्षेत्र के विद्यार्थी	
	कम मानसिक दबाव के विद्यार्थिओं की शैक्षिक उपलब्धि	अधिक मानसिक दबाव के विद्यार्थिओं की शैक्षिक उपलब्धि
संख्या	136	32
मध्यमान	74.71	73.75
मानक विचलन	8.59	12.18
प्रमाप विभ्रम	2.27	
मध्य अन्तर	0.96	
क्रान्तिक अनुपात (C.R.)	0.42	
सार्थकता स्तर 5%	1.96	

तालिका 4 से स्पष्ट है कि कम मानसिक दबाव के शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि तथा अधिक मानसिक दबाव के शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान क्रमशः 74.71 तथा 73.75 प्राप्त हुये हैं, जबकि प्रमाणिक विचलन का मान क्रमशः 8.59 तथा 12.18 प्राप्त हुये हैं। दोनो समूहों के मध्यमानों की तुलना करने पर क्रान्तिक अनुपात का मान 0.42 प्राप्त हुआ है, जो कि सार्थकता के स्तर 0.05 पर सार्थक नहीं है। अतः शोध कार्य से पूर्व बनायी गयी शून्य परिकल्पना स्वीकार की जाती है तथा यह कहा जा सकता है कि शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर मानसिक दबाव का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। परन्तु मध्यमान का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि यहाँ पर कम मानसिक दबाव के शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान अधिक मानसिक दबाव के शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान की तुलना में अधिक है, अतः कहा जा सकता है कि कम मानसिक दबाव के शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अधिक मानसिक दबाव के शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि से अपेक्षाकृत अच्छी पायी गयी।

शोध अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष:

परिकल्पना परीक्षण 1 के अनुसार छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर मानसिक दबाव का प्रभाव पड़ता है। प्राप्तांकों के माध्य के आधार पर कहा जा सकता है कि कम मानसिक दबाव के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि अधिक मानसिक दबाव के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि से अपेक्षाकृत अच्छी होती है।

परिकल्पना परीक्षण 2 के अनुसार छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर मानसिक दबाव का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। प्राप्तांकों के माध्य के आधार पर कहा जा सकता है कि कम मानसिक दबाव की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि अधिक मानसिक दबाव की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि से अपेक्षाकृत अच्छी होती है।

परिकल्पना परीक्षण 3 के अनुसार ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर मानसिक दबाव का प्रभाव पड़ता है। प्राप्तांकों के माध्य के आधार पर कहा जा सकता है कि कम मानसिक दबाव के ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अधिक मानसिक दबाव के ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि से अपेक्षाकृत अच्छी नहीं होती है।

परिकल्पना परीक्षण 4 के अनुसार शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर मानसिक दबाव का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। प्राप्तांकों के माध्य के आधार पर कहा जा सकता है कि कम मानसिक दबाव के शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अधिक मानसिक दबाव के शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि से अपेक्षाकृत अच्छी होती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:

- एन.के. जांगीरा (2004). संवेदनशील शिक्षण: नयी पद्धति के प्रयोग. नोएडा: मयूर पेपरबैक्स, पृ. 1 एवं 3
- एस.सी. ओबराय (1999). शिक्षण अधिगम के मूल तत्व. नई दिल्ली: आर्य बुक डिपो, पृ. 3
- शालिग्राम त्रिपाठी (1996). शिक्षण व्यवहार. नई दिल्ली: राधा पब्लिकेशन्स, पृ. 14
- रमन बिहारी लाल एवं राम निवास मानव (2010). शिक्षा मनोविज्ञान. मेरठ: रस्तोगी पब्लिकेशन्स, पृ. 121, 202, 220, 431, 432, 444
- मुहम्मद सुलैमान (2007). उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान. वाराणसी: मोती लाल बनारसी दास, पृ. 77, 278, 364, 367, 511, 512,
- बी. कुप्पूस्वामी (1976). बाल व्यवहार और विकास. नई दिल्ली: विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा. लि., पृ. 56, 290
- प्रीती वर्मा एवं डी.एन. श्रीवास्तव (2010). बाल मनोविज्ञान: बाल विकास. आगरा–2: अग्रवाल पब्लिकेशन्स, पृ. 272
- एस.पी. गुप्ता (2008). आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन. इलाहाबाद: शारदा पुस्तक भवन, पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स, पृ. 327
- C.B. Fleming & others. (2005). Do social and behavioral characteristics targeted by preventive interventions predict standardized test scores and grades? Journal of school Health, 75, pp. 342-349